कक्षा-आठवीं

विषय-नैतिक शिक्षा (द्वितीय)

अंक विभाजन एवं उत्तर संकेत **अधिकतम अंक 80**

आवश्यक निर्देश : यदि परीक्षार्थी ने ऐसा कोई सही उत्तर लिखा हो जो इस उत्तर संकेत में न हो तो उसके भी यथासंभव अंक दिए जाएँ।

प्रश्न संख्या	अपेक्षित मूल्यांकन बिंदु	निर्धारित अंक	कुल अंक
	(खण्ड-क)		
1.	(क) अटल	1	1
2.	(ग) त्यागपूर्ण	1	1
3.	(घ) ओ३म्	1	1
4.	(ख) धारण करना	1	1
5.	(ग) धारण करें	1	1
6.	(घ) ब्रह्म	1	1
7.	(क) 1967 ई.	1	1
8.	(घ) 1910 ई.	1	1
9.	(ख) वर देने वाली	1	1
10.	(क) फूलों वाले वृक्षों से	1	1

	(खण्ड-ख)		
11.	वाणी में पवित्रता आती है। मनुष्य की सभी शुभकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। (अन्य महिमा भी स्वीकार्य)	1+1	2
12.	नहीं धारण करना	1+1	2
13.	वेदों से ओत-प्रोत परम पवित्र	1+1	2
14.	किसी प्राणी को मन, वचन, कर्म से दु:ख न देना।	2	2
15.	स्वाध्याय अर्थात् स्व-अध्ययन, अपने मन और आत्मा का निरीक्षण। ओ३म् का जप, गायत्री का जप, वेद, उपनिषद् आदि पवित्र ग्रन्थों का पाठ स्वाध्याय कहलाता है।	1+1	1
16.	जन्म के आधार पर नहीं गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर।	½x4	2
17.	लड़का – पच्चीस लड़की – सोलह	1+1	2
18.	नाथ, वर	1+1	2
19.	बख्शी रामरत्न, प्रि. मेहरचन्द, पं. राजाराम, महात्मा हंसराज।	½x4	2

20.	अपने जीवनकाल में उन्होंने न्यायाधीश के रूप में जितने भी फैसले किए, उनमें से कोई भी ऊँची अदालत में पुनर्विचार के लिए नहीं गया।	2 2	
	(खण्ड-ग)		
21.	निश्चित रूप से ओ३म् का मानसिक जप हृदय में ज्योति प्रकट करता है, परन्तु वह जप केवल होंठ या कंठ से नहीं, हृदय से हो।	3	3
22.	हे अर्जुन! जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने फटे-पुराने वस्त्रों को उतारकर नए वस्त्र धारण कर लेता है उसी प्रकार यह आत्मा (शाश्वत) इस पुराने शरीर (नश्वर) को छोड़कर नया शरीर धारण कर लेती है।	3	3
23.	जिस प्रकार परमात्मा अपनी सविता शक्ति द्वारा सुप्त प्रकृति को प्रेरणा करके सृष्टि को रच देता है, इसी प्रकार परमात्मा को 'सविता' नाम से पुकारने वाले साधक का भी कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अपने आपको और दूसरों को प्रेरणा देकर अज्ञान की निद्रा को दूर करे, और सब मनुष्यों को ईश्वर भक्त, वेद भक्त तथा जनता-जनार्दन का सेवक बनाने का यत्न करे।	3	3
24.	पाँच हैं–अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।	½×6	3
25.	हमारी कमाई ईमानदारी की हो। चोरी, ठगी, लूटपाट, शोषण की न हो। खून पसीने की हो।	1×3	3

26.	सारे समाज को सुखी, समृद्ध बनाने का जिन्होंने व्रत लिया है, वे वैश्य हैं। कृषि, व्यापार तथा कला कौशल के माध्यम से वे समाज को सम्पन्न बनाने का संकल्प लेते हैं।	3	3
27.	संन्यास आश्रम में केवल उसी व्यक्ति को प्रवेश करना चाहिए जिसका मन संन्यासी हो जाए। संन्यासी के मन में छल, कपट, द्वेष, क्रोध, लालच या अन्य किसी भी प्रकार की बुरी भावना है तो उसका संन्यास झूठा है।	3	3
28.	बृहस्पति– बड़ों से बड़ा एवं आकाश तथा ब्रह्मांड का स्वामी। विष्णु– चर और अचर जगत् में व्यापक।	1½+ 1½	3
29.	राजा का जीवन आदर्श होना चाहिए। उसमें कोई भी बुराई या दुर्गुण नहीं होना चाहिए। राजा को प्रजा के साथ पूरा न्याय करना चाहिए तथा न्याय करते समय पक्षपात नहीं होना चाहिए। अपराधी को कड़े से कड़ा दण्ड मिलना चाहिए।	3	3
30.	वर्तमान में डी॰ए॰वी॰ कॉलेज ट्रस्ट एवं मैनेजिंग कमेटी देश की सबसे बड़ी गैर-सरकारी स्वावलम्बी शिक्षण संस्था है। 1 जून 1886 में लाहौर में पहला डी॰ए॰वी॰ स्कूल और 1889 ई. में पहला डी॰ए॰वी॰ कॉलेज खोला गया। कभी भी सरकार से कोई आर्थिक सहायता नहीं ली। अतः यह संस्था पूर्णतया आत्मनिर्भर है।	3	3

(खण्ड-घ)

31. संस्कृत भाषा नियम में चलने के कारण सीखने में किसी भी दूसरी भाषा की अपेक्षा अधिक सरल है। संस्कृत जानने वालों को विश्व-भर की, विशेषत: भारत की किसी भी भाषा को सीखने में, दूसरों की अपेक्षा कम समय लगता है। इसके व्याकरण और अनुवाद का शिक्षण, बुद्धि को वह दिशा प्रदान करता है जिससे छात्र का गणित तथा विज्ञान के विषयों में प्रवेश सुगम हो जाता है। 5 5

अथवा

गुरु गोविन्द सिंह जी संस्कृत के बड़े भक्त थे। उन्होंने अपने कुछ शिष्यों को संस्कृत पढ़ने काशी भेजा था। उनका 'दशम ग्रन्थ' यद्यपि हिन्दी में है किन्तु संस्कृत के ज्ञान के बिना इसे अच्छी तरह समझ पाना असम्भव है। गुरुजी के संस्कृत प्रेम के कारण ही प्रत्येक सिख रियासत में संस्कृत की नि:शुल्क पाठशालाएँ चलती रहीं। 5 5

32. राजर्षि टंडन अंग्रेजी को पन्द्रह वर्ष की छूट दिए जाने के पक्ष में नहीं थे। उन दिनों कांग्रेस पर उनकी पकड़ भी नेहरू जी से अधिक थी। नेहरू जी पन्द्रह वर्ष अंग्रेजी बनी रहने का हठ करने लगे। इधर टंडन जी टस से मस नहीं हो रहे थे। ऐसे में बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' तथा सेठ गोविन्द दास ने टंडन जी के चरण पकड़ लिए और उनसे पंडित नेहरू की दस साल अंग्रेजी बने रहने की हठ मान लेने की प्रार्थना की और कसम खाकर कहा कि हम पन्द्रह साल के बाद अंग्रेजी को और छूट नहीं देने देंगे, तब टंडन जी नेहरू जी का हठ मानने को राजी हो गए। अंग्रेजी को पन्द्रह साल की छूट दे दी गई। 5 5

अथवा

आर्य समाज ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अनथक प्रयास किया। हिन्दी में समाचार पत्र और पत्रिकाएँ निकालीं। दक्षिण भारत, फिजी और मॉरीशस, अफ्रीका इत्यादि में भी आर्य समाज के प्रचारकों ने हिन्दी में बड़ा काम किया। हिन्दी-साहित्य के निर्माण कार्य में आर्य विद्वानों का बहुत ही प्रशंसनीय भाग रहा है। उनमें से बहुतों को अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से मंगलाप्रसाद पारितोषिक और केन्द्रीय एवं प्रादेशिक सरकारों से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। 5 5

33. चौथा महायज्ञ कहा जाने वाला नित्य कर्म अतिथि यज्ञ है। यदि कोई व्यक्ति बिना बुलाए, बिना सूचना दिए, अपरिचित रूप में आपके घर आ जाए तो उसका स्वागत कीजिए, सत्कार कीजिए, उसे खाने और पीने को दीजिए। यह अतिथि यज्ञ हमारी संस्कृति का एक उज्ज्वलतम चिह्न है। आज देश के कई भागों में अतिथि के लिए प्यार और सम्मान की भावना विद्यमान है। 5 5

अथवा

पूरी पृथ्वी का वायुमंडल प्रदूषित हो रहा है। पूरी दुनिया में प्रदूषण निवारण का काम एक साथ करना चाहिए। 'अग्निहोत्र' संसार को कल्याण का मार्ग दिखा रहा है। अनेक वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा भी यज्ञ का महत्त्व स्पष्ट हो चुका है। पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि भारतीय संस्कृति की अनुपम भेंट 'अग्निहोत्र' को सुरक्षित रखें, यज्ञ करें एवं इसका प्रचार-प्रसार करें। 5 5

34. विद्या का अर्थ किसी भी वस्तु का यथार्थ अर्थात् ठीक-ठीक ज्ञान है। वास्तविकता के विपरीत ज्ञान को अविद्या कहते हैं, जैसे रस्सी को साँप समझना, झूठ को सच समझना, अपनों को पराया समझना, यह अविद्या अर्थात् अज्ञान है। अन्धविश्वास या किसी भी बात पर बिना सोचे-समझे विश्वास कर लेना भी अविद्या है। आर्य समाज ने कुछ अन्धविश्वासों जैसे–सती प्रथा, विधवा विवाह न होना, छुआछूत और बाल-विवाह आदि को समाप्त करने के लिए बहुत प्रयास किया है। अन्धविश्वासों या अज्ञानता को समाप्त करने से ही विद्या की वृद्धि सम्भव है। 5 5

अथवा

मनुष्यों को विशेषकर आर्य समाज के सदस्यों को प्रेरणा दी गई है कि वे केवल अपनी ही उन्नति में सन्तोष न करें। उन्हें यह भी देखना चाहिए कि उनके आसपास रहने वालों या कार्य करने वाले अन्य व्यक्तियों की भी समान रूप से उन्नति हो। दूसरे शब्दों में, यह भी कहा जा सकता है कि हमें कोई भी कार्य करने से पहले यह सोच लेना चाहिए कि हमारे इस कार्य से हमारे आसपास रहने वाले अन्य लोगों पर इसका कोई गलत प्रभाव तो नहीं होगा। हमारे कार्यों से हमारे साथ-साथ अन्य लोगों की भी उन्नति होनी चाहिए। 5 5